माहौलियात (वातावरण) की सुरक्षा

सत्रहवां फ़िक्ही सेमिनार (बुरहानपुर) दिनांक 28-30 रबीउल अव्वल 1429 हिजरी, 5 - 7 अप्रैल 2008 ई॰ को आयोजित हुआ।

अल्लाह ने मनुष्य को जिस दुनिया मे पैदा किया है उसमें उसे सुख शान्ति के सामान भी पैदा किए हैं, उनमें कुछ ऐसी चीज़ें भी हैं जो प्रदूषण का कारण बनती है। लेकिन हमारे पालनहार ने इस संसार में ऐसे साधन भी पैदा कर दिए हैं जो प्रदूषण को समाप्त करते रहते हैं। मनुष्य को इनके हानिकारक प्रभावों से बचाते है। और जो चीजें प्रदूषण का कारण बनती हैं वही गुप्त होने के बाद प्राकृतिक व्यवस्था में मज़बूती और बेहतरी का कारण बन जाती हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उद्योगिक क्रान्ति ने जहां मानवता को बहुत कुछ हितकारी और लाभदायक जीवन के लिए साधन उपलब्ध किए हैं, वहीं उनकी वजह से अन्तरिक्ष सम्बन्धी जल सम्बन्धी और ध्वनि सम्बन्धी प्रदूषण में भी असाधारण वृद्धि हुई है।

मौसमों का संतुलन प्रभावित हुआ है तरह तरह की बीमारियां जन्म ले रही हैं और वैज्ञानिकों का विचार है कि यदि इस पर नियंत्रण नहीं किया गया तो इसके परिणाम मानवता के लिए अत्यन्त कष्ट दायक और विनाशकरी होंगे। इन प्रदूषणों को समाप्त करने के साधनों का भी वैज्ञानिकों ने मार्ग दर्शन किया है, लेकिन कम से कम खर्च द्वारा अधिक से अधिक पैदावार हासिल करने के उद्देश्य से उद्योगपति इनका इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं जो ग़ैर इस्लामी और अमानवीय कार्य भी है। इस पृष्ठभूमि में निम्न प्रस्ताव स्वीकार किए जाते हैं।

1. उद्योगपतियों को चाहिए कि यदि ऐसे उद्योग स्थापित करें जो प्रदूषण पैदा करते हों तो ऐसे संसाधन भी इस्तेमाल करें जो इन प्रदूषणों को समाप्त करने की क्षमता रखते हों ताकि वातावरण को और इसके ज़रिए से मनुष्यों को हानि नहीं पहुंचे।

2. मल्टीनेशनल कंपनियों का देश में आना कुछ पहलुओं से निश्यचय ही लाभकारी है कि इससे बाजार में प्रतिस्पर्धा पैदा होती है और खरीदार को अच्छी वस्तुएं मिलती हैं लेकिन ये उद्योग अपने साथ औद्योगिक गन्दगियों का ढेर और विभिन्न प्रकार के प्रदूषण भी साथ ला रहे हैं, इस लिए सेमिनार भारत सरकार से मांग करता है कि स्वदेशी कम्पनियां हों या विदेशी उनके लिए ऐसे क़ानून बनाए जाएं और उनपर अमल करने का पाबन्द बनाया जाए जो वातावरण की सुरक्षा में सहयोगी और हानिकारक प्रभावों से बचाते हों।

3. इस समय वातावरण सम्बन्धी प्रदूषण के कारण जिन खतरों से दुनिया दोचार है यह अधिकांश गतिशील देशों की कृपा हैं इन देशों ने अधिक से अधिक लाभ कमाने और सस्ती से सस्ती पैदावार हासिल करने के उद्देश्य से उद्योगों को वातावरण सही बनाने पर ध्यान नहीं दिया, और प्रदूषण को नष्ट करने के साधन नहीं जुटाए, यहां तक कि अब जबकि प्रदूषण की समस्या एक भयानक रूप ले चुकी है वे इसके प्रभावों को दूर

करने के सिलसिले में अपनी ज़िम्मेदारियां स्वीकार करने से पीछे हट रहे हैं।

सेमिनार मांग करता है कि वे मानवता के प्रति अपने रवैए को ठीक करें, और भारत सरकार से अपील करता है कि वह दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश और एक विश्वव्यापी शक्ति होने की हैसियत से इस संबंध में प्रगतिशील देशों को उनकी जिम्मेदारियों का पाबंन्द बनाने की कोशिश करे।

4 समस्त देश वासियों को निर्देश दिया जाता है कि वे अपने पर्यावरण को साफ़ सुथरा रखने का आयोजन करें, ऐसी चीज़ें जो आबादी में प्रदूषण पैदा करने वाली हैं और दूसरों को कष्ट पहुंचाने वाली हों जैसे रास्तों और आबादियों के बीच पेशाब पाखाना करने, घर से बाहर खुली नालियां निकालना, साफ जमा हुए पानी में गन्दगियों को डालना, भट्टी और चिमनियां आबादियों के बीच लगाना, गाड़ियों में मिट्टी के तेल का इस्तेमाल बेजा तरीके से लाउड स्पीकर बजाना आदि, इन सब कामों को करने से बचें ताकि समाज खतरनाक बीमारियों और दूसरी हानियों से सुरक्षित रहे।

☆☆☆